SUBMISSION OF JUNIOR FELLOWSHIP

FINAL PROGRESS REPORT
Period : January 2016 to January 2018

Ms. Ankita Anand (Visual Art Painting

File no:- CCRT/JF-3/93/2015

Sir,

As per the schedule of submission of Junior Fellowship Progress Report I am here with submitting my progress last report in detail, along with Photographs/Evidence containing the detail of work done during the period from January 2016 to January 2018 . For the release of final instalment of the fellowship

Thanking You
Your Sincerely

Ms. Ankita Anand
D/O Ashok Jaiswal
96/105, Nai basti, Kydganj,
Allahabad, Uttar Pradesh - 211003
E-mail: ankita17sep@gmail.com
Mobile no.: 7080803706

Kohbar Folk Art

My work informed and inspired by observation of Nature as well as interconnected to Mithila art form 'Kohbar',
historical fantasy and facts, rituals based work explores patterns, vegetal form, symbols, village-based mural.
The patterns that are found everywhere in nature work on various levels, I am fascinated by derivations of
patterns from nature. We tend to take these more decorative applications of pattern for granted since they
are ever-presented of our environment.
These patterns in my work as well as the flora and fauna, are all based upon direct observations. They are not merely decorative embellishment, but have a basis in social reality. To some extent they also establish location, period, a sense of imagination and incidents of Katha.
The more stylized patterns, used as border and motif of the paintings are directly appropriated Indian
textile print design for example, floral and geometric shapes, about the depictions of birds and marine creatures
like fishes, turtle and other creatures. I use them not only because of their patterns and colors but because their
presence in the landscape can be strong indicator of wedding rituals and for fortune, for me they symbolized.

कोहबर का पुरातन इतिहास

कोहबर घर बनाने का इतिहास वेदकाल से चला आ रहा है। जितनी पुरानी सनातन धर्म में विवाह की परम्परा है उतना पुरातन कोहबर का भी इतिहास रहा है। जिसका वर्णन रामायण में भी किया गया है। राम जानकी विवाह की सभी रस्में कोहबर की छाँव में ही हुई थी। सीता ने अपने स्वयंवर से पूर्व मण्डप गाड़कर गौरी पूजन किया था ताकि उन्हें राम, वरण कर सके। कोहबर घर पर ही ब्याह सम्पन्न होता है जोकि मिथिलान्चल प्रदेश से इसका उद्‌गम जुड़ा हुआ है। जब भाषा का उद्‌गम व उत्थान भी नहीं हुआ तब से चित्रकला ही संचार का माध्यम रही है। इसका इतिहास प्रागैतिहासिक काल से ही उद्‌गारित हुआ है। इस कला का प्रारम्भिक उद्‌गम तो पूर्णतः ज्ञात नहीं परन्तु इसकी जड़े रामायण काल से ही जुड़ी हुई पाई गई है। याजवल्कय व वाल्मीकि जैसे महान ज्ञाता व विद्वानों ने ग्रन्थों व उपनिषदों तथा पौराणिक दर्शनशास्त्रों में इसका उल्लेख किया गया है।

कोहबर मिथिलाकला का एक हिस्सा नही है, बाद में इसे एक सम्पूर्ण कला मान लिया गया। इसका उद्‌भव मिथिला जोकि वर्तमान में बिहार के उत्तरी भू–भाग में हिमालय की तराई में गंगा, कोसी की गोद से होते, नेपाल व भारत के बार्डर पर स्थित था। वर्तमान में यह हिस्सा मधुबनी, दरभंगा, सहसा आदि जिला माना गया है।

जनकपुरी के राजा जनक का सम्पूर्ण साम्राज्य भारत का नेपाल तक विस्तृत था, उन्होंने अपनी पुत्री सीता के विवाह के उपलक्ष्य में देवलोक सरीखा सजाया था। प्राचीन काल से वर्तमान तक यह सुसज्जित भित्तीचित्र, भारत व नेपाल दोनों ही देशों की परम्परा बन चुका है। बुद्ध के काल में बुद्ध ने मिथिला की धरती पर भी समय बिताया था। मध्यकाल में जिसका वर्णन कई लोकचित्रों व लोकगीतों में भी प्राप्त है। कोहबर का अर्थ "वह स्थान जहाँ पर पवित्रता सबसे ज्यादा होती है।" 2000 साल से भी पुराना इतिहास है कोहबर घर का प्रथम वर्णन रामायण में सीता स्वयंवर के प्रथम चरण में हुआ है जहाँ पर श्लोक ने उल्लेख है कि राजा जनक ने अपने पुत्री के विवाह में अपने राज्य व महल को स्थानीय कलाकारों से सजवाया था जब दशरथ नन्दन राम, उनकी सुकोमल सुहृदया पुत्री सीता को ब्याहने जनकपुरी में समस्त बारातियों के साथ आये थे। सीता राम के ब्याह सम्बन्धी तमाम घटनाओं का वर्णन कोहबर व मधुबनी चित्रकला में सबसे ज्यादा किया गया है।

जी. आर्चर को इस कला में पुरातन पम्परावादी विषयों के साथ एवं विपरीत स्वभाव वाले आधुनिक डिस्टार्शन के साथ प्रयोग करने की विद्या अत्यन्त प्रभावित की, वे इस कला के प्रति जुड़ाव को कई बार सामने लाए तथा इसके उत्थान हेतु प्रयास भी किया। वे स्वभावतः एक रचनात्मक व्यक्ति थे जो प्रशासनिक मकड़जाल से उबकर सौन्दर्यपान करना चाहते थे, उनका वक्तव्य, "मैं सजग था, कि यह घटना स्वाभाविक या आकस्मिक थी। मैं कभी नही

चाहता था कि मैं मैथिल में टूटी दीवारों को देखूँ परन्तु अकस्मात् मैंने मिट्टी के ढ़ेर में से सौन्दर्य को देखा। आर्चर परम्परावादी नीरस प्रोविजिनल सेनरास सुपरीटेण्डेन्ट थे, इस घटना के पश्चात् वे पुनः उस स्थान पर गये और उन्होंने इन देसी ग्रैफिटी की तस्वीरें उतारी तथा उनकी प्रतिलिपि पेपर पर अपने स्मरण के लिए ली। आर्चर ने इन सभी चित्रों के विषयों को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया–

1. दैवीय व परलोक विषय
2. मुख्यतः चयनित पेड़–पौधे, जानवर की आकृतियाँ (जो डिस्टार्शन प्रक्रिया के अनुसार उनके प्राकृतिक स्वरुप से भिन्न होती है)।

पहले विषय जो देवी–देवताओं, ग्रह–नक्षत्र जोकि कोहबर की छाँव में बैठे नवदम्पत्ति को उनके सम्बन्धियों के सहित आर्शीवाद देते है। आर्चर लिखते है यह सभी दैवीय आकृतियाँ विवाह के समस्त रस्मों रिवाजों की साक्षी होती है और आने वाली समस्त विघ्नों को दूर कर अनुष्ठान को निबटाने की जिम्मेदारी उनकी होती है। अन्य विषय जिनमें जानवरों, पुष्प–पेड़–पौधे की आकृतियाँ जोड़े में होती है जोकि नवदम्पत्ति को जीवन में परस्परता व सद्भाव के साथ रहने का पाठ देती है। दुर्गा, काली, रामसीता सूरज ग्रह नक्षत्र आदि आराध्यो का चित्रण इसलिए किया जाता है कि यह सभी अटल है ताकि नवजोड़े भी सदैव साथ रहे और उनका साथ अटूट रहे। जलीय जानवर व पौधे जैसे कमलदल जिसको कोहबर कला में स्त्रीय कौमयिता का प्रतीक माना जाता है व बाँस को पुरुष का। चित्र में कमलदल को भेदते हुए चित्रित किया जाता है। कुछ कला विशेषज्ञों ने इस प्रतीको (स्त्री–पुरुष तत्त्व) पर शोध किया और माना कि यह गन्धर्व नैना–योगिनी (जो बुरी आत्माओं से बचाती है) को संप्रतीक मानकर चित्रित किया गया है। महानकला संरक्षक फ्रेंचमैन यूल्स वेक्वैड जो १९७० में भारत की राजधानी दिल्ली में आये वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने मधुबनी की जानीमानी कलाकार पद्मश्री गंगादेवी की कला को पहचाना जिसका जिक्र उन्होंने अपनी किताब The art of Mithila : Ceremonial paintings from Ancient में भी किया है। भारतीय कला विद्वानों जैसे जयाकर और उपेन्द्र ठाकुर के अनुसार, "आर्चर व वैक्वैड ने कोहबर के सम्प्रतीकों को सिर्फ स्त्री व पुरुष के यौन रूपकों से ही जोड़कर देखने की अति विवेचना कर दी है।"

कोहबर की छाँव में ब्याह की रस्में और अनुष्ठान

कोहबर को उकेरने की कला परम्परावादी ग्रामीण व मिथिलांचल आदिवासी महिलाओं द्वारा पिछले कई दशकों से चली आ रही है जिसमें वे अपने घरों की दीवारों व फर्श पर चित्रांकन करती रही है। विभिन्न शुभ अवसरों पर जैसे, विवाह, जनेऊ संस्कार, अन्नप्रासन, गोदभराई, उपनयन जैसे आयोजनों पर रस्मी तौर पर बनाई जाती रही है, कोहबर की रंगबिरंगी दुनिया, जीवटता के साथ जीवन के विभिन्न आयामों को विविधता के माध्यम से उभारती रही है।

कोहबर का जन्म विथिलाकला के सानिध्य में हुआ है तथा विख्यात मधुबनीकला के अन्तर्गत पुष्पपल्लवित हुई। जनक नंदिनी सीता के विवाह में कोहबर पर ब्याह की रस्में हुई द्वाराचार से लेकर विदाई तक सभी रस्में जनक पुत्री व अयोध्यानन्दन राम का ब्याह कोहबर की छाँव में ही हुआ। कोहबर घर, विवाह के पूर्व व पश्चात्, कन्या व वर दोनों के पक्षों के होने वाले अनुष्ठानों/रस्मों का साक्षी होता रहा है। कोहबर घर, बाँस द्वारा बनाई गई छावनी जोकि एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पवित्र स्थान माना जाता है। जहाँ नव युगल अलग–अलग एवं साथ व परिवार के सदस्यों के साथ रस्में व नेगाचार निभाते है। यह रस्में समय के साथ धूमिल पड़ गये रिश्तों में नई जान फूँक देती है। साथ में नव दम्पत्ति को आने वाले नवीन जीवन के लिए आशीर्वाद स्वरूप प्रसाद प्रदान करती है। "गौरी व शिव" जो कि प्रतीक है अर्धनारीश्वर स्वरुप का सर्वप्रथम मिथिलांचल की राजकुमारी सीता ने मण्डवा सजाकर गौरी पूजा की थी। कोहबर की परम्परा एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी को हस्तान्तरित होती जा रही है। कोहबर मिथिला के विवाह में अवश्यांभी होता है जैसा कि गुरु विद्यानाथ झा ने कहा। विवाह के घर में लग्नतिथि के साथ ही दीवारों पर मण्डप पर सीता स्वयंवर व धार्मिक चिह्नों का रेखांकन विविध चटकीले रंगो के माध्यम से होना प्रारम्भ हो जाता है। मण्डवा को हरे बाँस के लट्ठे जो जमीन में गाड़ा जाता है उसमें मौरी, चिड़िया से सजाया जाता है और दिवारों पर हिन्दू देवी–देवता, दूल्हा दूल्हन के संप्रतीक, मछली, कछुआ, साँप, गाय, मोर, सूरज, तोर, नक्षत्र, ग्रह, पारम्परिक चिह्न अंकित किए जाते है यह सारी आकृति मूल स्वरूप से अलग, प्रतीकात्मक स्वरूप में होती है जोकि विवाह की साझी और ब्याह में आने वाली विघ्नों, बाधाओं व नजर से बचाने के लिए और नवदम्पत्ति को वंशबेल को बढ़ाने के लिए आर्शीवाद देने के लिए अंकित होती है। विवाह सम्बन्धी अनुष्ठान कोहबर के नीचे 4 से 5 दिनों तक रस्मो रिवाजों के अनुसार चलती है जिसमें वर–वधू पक्ष के लोग सम्मलित होते है जैसे–हल्दी, मेंहदी, पीपर पिसाई, तेल उबटन, देवी अनुष्ठान, सिलबट्टा पुजाई, वंशधर (जिससे अपने पूर्वजों का आवाहन करके विवाह में आमंत्रित किया जाता है) मण्डवा पुजाई, चकरी, मधानी, मूसल, कढ़ाही, चूल्हा, बेलन, सूप आदि घरेलू वस्तुओं की पुजाई की जाती है। मण्डवा के नीचे ग्रह नक्षत्रो, देवी देवताओं, कुल देवी, ब्रह्म,

पूर्वजों/पितरों की पूजा करके तृप्त किया जाता है और उनके प्रसाद हेतु भोजन को मड़ई के नीचे मिट्टी के चूल्हे में पकाया जाता है, जेवनार जिमाई के लिए प्रथम प्रतीकात्मक भोजन अल्पमात्रा में बनाकर भंडारे में मिला दिया जाता है। ताकि आमंत्रित मेहमानों के लिए भोजन भण्डार में कमी न हो। मण्डपा के नीचे ही ब्याह बैठता है और वही पर सभी रस्में शुरु व खत्म होती है। मण्डप के फर्श, दीवारों को गीले गोबर व मिट्टी से लीप कर तैयार किया जाता है फिर मण्डप गाड़ कर फर्श पर नवग्रह व अरिपन (जिसे चावल) बनाया जाता है, कलश भरकर, सूप, मूसल, पीढ़ा को रंगकर वहाँ रखा जाता है। मण्डप में रखने के लिए मिट्टी तालाब या नदी किनारे से लाई जाती है। तीन दिन तक ब्याह के रस्मों के साथ, चतुर्थी के दिन तक दूल्हा/दुल्हन को कोहबर की छाँव में ही रात बितानी होती है। पाँचवे दिन तड़के फेरे होने के बाद तक।

मंगल गीत

परदा का ओट करा गोरे बाबा,
सीता कै सेंदुरा बहारे रे।।
सेंदुरा बहोरि जब लौटी गौरा देई,
रामा हँसे मुसुकाय,
सीता गौरा एकै कोखी जलमी,
गौरा सँवरि सीता गोरि,
रामा लछिमन एकै कोखी जलमें,
रामा संवर लछिमन गोर।।

कोहबर के इतिहास पर पड़ताल

कोहबरकला की भाषा हमेशा में जटिल परन्तु चित्रांकन पद्धति हमेशा से व्याख्यात्मक, वर्णनात्मक एवम् सृजनात्मक प्रतीक चिह्नों द्वारा चित्रित की गयी है। पूर्व में महिलाओं द्वारा घर की दीवारों को शुभ अवसरों के उपलक्ष्य में चूने व गोबर से लीप–पोत कर प्राकृतिक-साधनों द्वारा तैयार चटकीले रंगो के द्वारा बनाया जाता रहा है। यह घर के प्रांगण से निकल कर दुनिया के समक्ष तब आई जब 1934 में बिहार को भूकम्प ने उजाड़ कर दिया था, घर की चारदीवारी, दरवाजे टूटे हुए थे तब घर की अन्दरूनी दीवारों पर उकेरी गई सृजनात्मकता परिलक्षित हुई। उस समय के मधुबनी जिले में तैनात ब्रिटिश कोलोनियल अधिकारी विलियम जी आर्चर जो कि भूकम्प के बाद की तबाही का जायजा लेने निकले थे, जब उन्होंने टूटी दीवारों से बाहर झाँकती इन कलाकृतियों को देखा तो वे आश्चर्यचकित रह गये। जी. आर्चर इसके पूर्व साउथ एशिया के लन्दन विक्टोरिया व अल्बर्ट म्यूजियम में क्यूरेटर (कला निरीक्षक), भी रह चुके थे। वे मंत्रमुग्ध होकर इन अलौकिक सृजन की कृति की पराकाष्ठा को निहारते रह गये। अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर उन्होंने इन भित्ति चित्रों की तुलना

पश्चिम के महानतम कलाकारों–क्लीं, मिरो और पिकासो की कृतियों के समकक्ष की। भारतीय कला में यूरोपियन कला के भाँति डिस्टॉर्शन (कुरुपता) की प्रवृत्ति नहीं पाई जाती थी। परन्तु प्रथम बार इन भित्ति चित्रों के कलाविषयों में डिस्टड्रॅशर्न का प्रारूप देखा तो वे अत्यधिक प्रभावित हुए और उन्होंने इसके ब्लैक एण्ड व्हाइट तस्वीरों को अपने साथ ले गये। 1949 में इनमें से कई तस्वीरों को इण्डियन आर्ट जर्नल में प्रमुखता से छापा गया। तद्पश्चात् पूर्णतः यह चित्रकला पर्दापण दुनिया के समक्ष परिलक्षित हुआ। कोहबर के अलौकिक विषयों के प्रतीकात्मक व एंकात्मक एवं लयात्मक चित्रण जोकि विवाह सम्बन्धी आयोजनों में प्रयुक्त होते रहे हैं। उनके चित्रण के पीछै की व्याख्या उनके कारणों पर अनेक शोध व परिचर्चाएँ हुई। साधारण सी ग्रामीण महिलाओं द्वारा बनाई गई इन अद्भुत चित्रांकन को देख सारी दुनिया आश्चर्यचकित रह गई कि कैसे यह अनपढ़ ग्रामीण महिलाएँ इतने जटिल विचारपरक विषयों पर चित्रण कर सकती हैं, कई कला विशेषज्ञों ने बारीकी से इन पर अध्ययन किया तथा अन्य विषयों जैसे–ग्रामीण शिल्पकला, उनके रीतिरिवाज, संप्रतीक चिह्न, ऊँची/नीची जातियों के अलग–अलग रुपांकन विधि, तन्त्र–मन्त्र के प्रतीक चिह्न, रहन–सहन के तरीकों व वंशवाद की उत्पदादनल व प्राकृतिक आपदाओं से तहस–नहस हो चुके घर–बार को सुधारात्मक प्रयास करने की जिविषा को कला के माध्यम द्वारा प्रस्तुत करने को कलाकार के प्रयास को सराहा/ इसके बाद भारत को एक और भयानक सूखे ने सूबे के लोगों में निराशा के भंवर में फँसा दिया, जिससे उनकी कमर टूट गई, तब ऑल इण्डिया हैण्डीक्राफ्ट बोर्ड ने मधुबनी, दरभंगा की कुछ अगड़ी जाति की महिला कलाकारों को प्रोत्साहित किया कि वे इस कला को जीविकोपार्जन का जरिया बनाये, देश–विदेश में लोकप्रिय यह देसी ग्रैफिटी दीवारों को सजाने के साथ–2 कागज व कपड़ों पर भी दिखाई देने लगी। मिथिला पेंटिंग क्षेत्र की अग्रणी जाति जैसे ब्राह्मण व कायस्थों की स्त्रियों द्वारा बनाई जाती थी जिनकी विधि व तरीके एक–दूसरे से भिन्न होते थे जैसे ब्राह्मण स्त्रियाँ दीवार चित्रों में चटक रंगों द्वारा सपाट आकृतियाँ भरती थी, वहीं कायस्थ स्त्रियाँ खड़ी व लेटी काली–लाल रेखाओं द्वाना आकृतियों को केवल आउटलाइन करके बनाती थी। इन्हें बनाने से पूर्व दीवार/फर्श को धोकर गोबर व मिट्टी से लीपकर चूने के प्लास्टर से पक्काकर लेती थी तथा सूखने पर आकृतियाँ उकेरती थी ताकि विषय उभरकर आ सके। रंगों को भी वे परम्परात्मक प्राकृतिक तरीकों द्वारा बनाती थी, जैसेः– काले रंग को काजल से, पीला रंग हल्दी से, हिरौंजी पत्थर घिसकर, गेरु रंग, हरा रंग बेलवृक्ष के पत्तियों को पीसकर तैयार कर लेती थी। कपड़े व अंगुलियाँ द्वारा आकृतियों में रंग भरती थी। परन्तु 20वीं सदी के आखिरी दौर तक बाँस की खंपचियों पर आगे कपड़ा लपेटकर प्रयोग में लाने लगी। ग्रामीण महिलाएँ समूहों में कलाकारी करने लगी तथा अपने सानिध्य में अन्य कलाकारों की पौध को भी तैयार करने लगी।

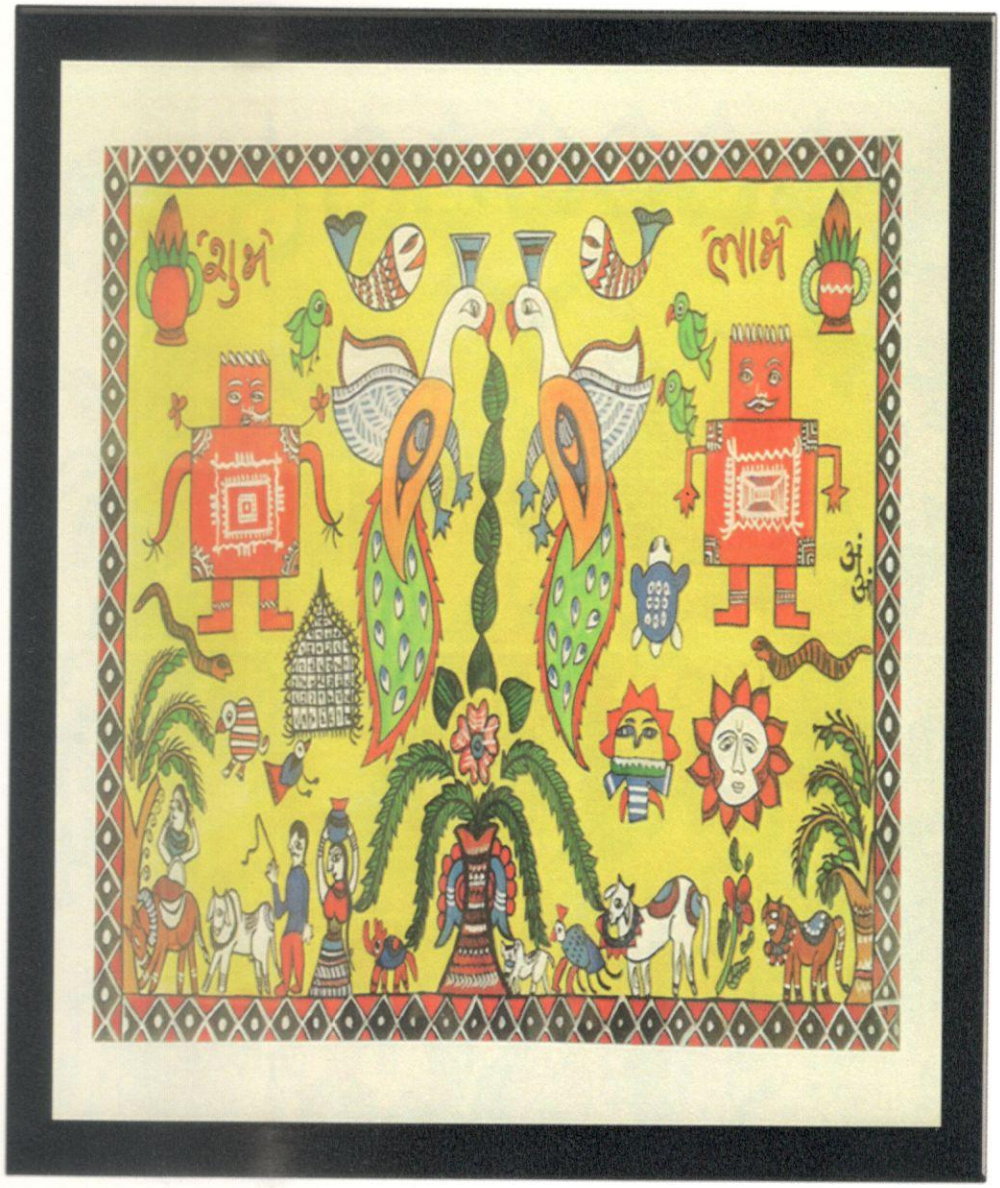

Ankita Anand Kohbar ki Chaav Series 7 Medium: Acrylic

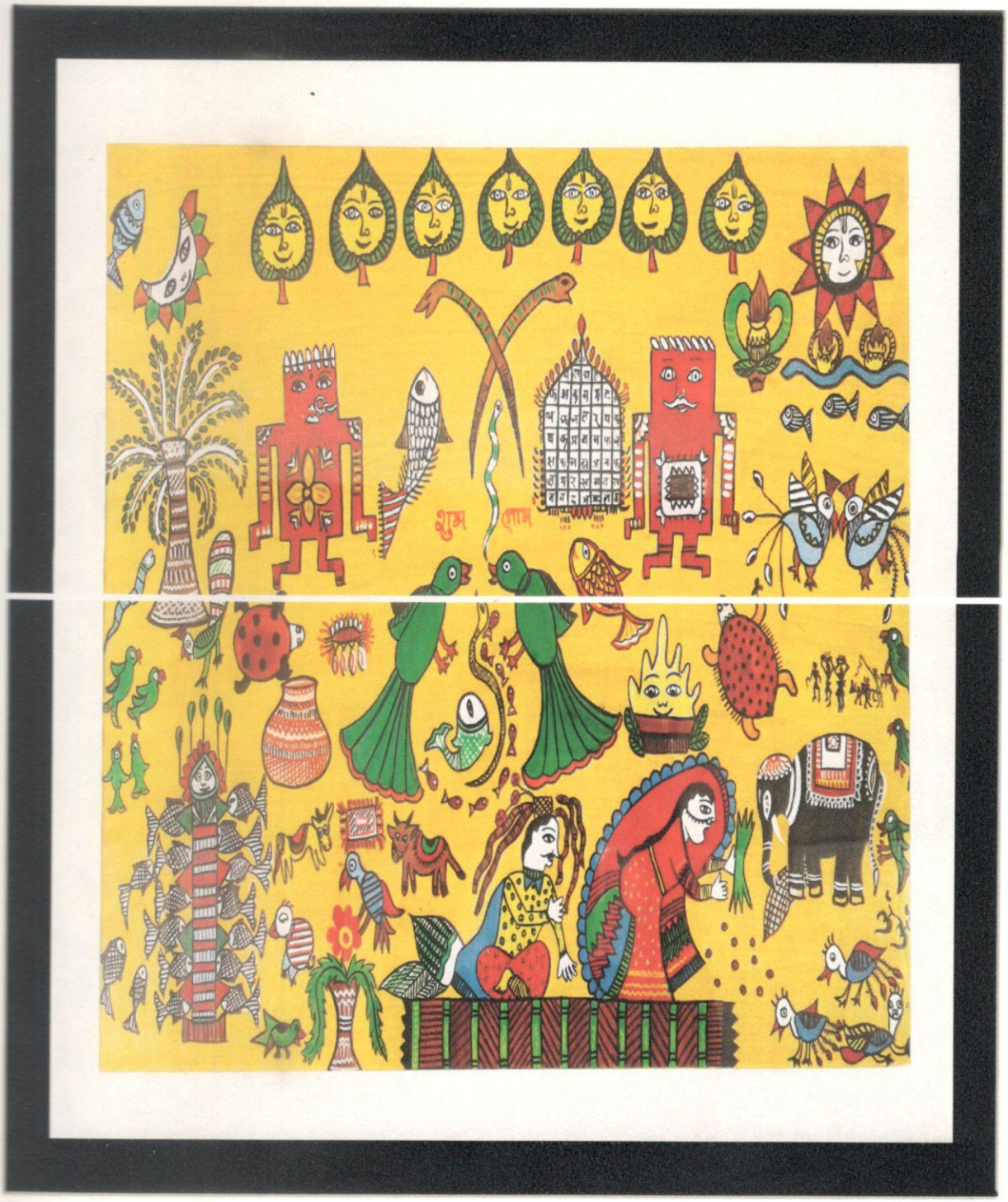

Ankita Anand Kohbar ki Chaav Series 6 Medium: Acrylic

कोहबर की छाँव

सार :- कोहबर भिति चित्र भारत की वैविधता पूर्वकाल इतिहास का गौरवशाली व महत्वपूर्ण हिस्सा है जोकि अपने अनूठेपन, अर्थपूर्वक रेखांकन , रूपक, प्रतीको व चिह्नो के लिये जान जाता रहा है। पांरपकि कोघवर अपने समान-सपाट, सरलतम डिजाइन, अंलकरण व अनुठे कलात्मक लक्षणो से परिपूर्ण माना जाता रहा है मिथिला के पारंपरिक कलाकार सालों से अपने कला परंपरा को जीवंत रखा है। समयदर समय होने वाले है। पीढी पर पीढी निरंतर चलने वाले कला के हम संगम को अन्य जातियो व बिहार-पूर्वोतर इलाको के लोगो के अलावा भी अन्य अंचल के लोगो ने इसे अपनाना प्रारम्भ कर दिया है। भारत एक कलात्मक एवं सुरूचिपूर्वक लोगो का देश रहा है जहाँ विभिन्नता मे भी एकता के साथ अपने संस्कृति व नियमो, रीति – रिवाजों का आदान –प्रदान करते है । भारत का कला दर्शन अत्यंत व्यापक है यहाँ घर-घर में कलाकार बसता है जहाँ लोककला की परंपरा – पुष्प – पल्लवित होती है। जिसका कला संदर्भ में सारगर्भित अर्थ निहित होता है जैसे मछली जो सम्पन्नता, वैभव व पवित्रता का प्रतीक मानी जाती है। अपने चौथे शोधपत्र में मैने कोहबर के आलेखन में प्रयोग होने वाले देवी –देवताओ के प्रतीकात्मक रूपण पर तथा अपनी पेटिंग में पडने वाले समसामयिक कला का प्रभाव पर चर्चा की है तथा कोहबर के उद्‌गम स्थान व आसपास के इलाको मे जाकर कलाकारो से चर्चा करने के साथ ही सरकार की प्रयोग पर भी प्रकाश डाला है:-

जितबरपुर, रान्ती , दरंभगा, मधुबनी जिले में दर्शकों पुराने बुजुर्ग कलाकार जो अपना पूरा जीवन कला को समर्पित कर चुके हे और विदेशो मे भी जीवन की कला को समर्पित

का भार वधू पक्ष के ऊपर पड़ता है। मेरा इरादा इसे ८ फीट तक Extent करने का है।

तृतीय कार्य का विवरण :- अपने अन्य कार्य में मैने सेरेभिक Stone Work Clay द्वारा 7 cm x 8 cm के धारे-२ ज्यामितिय आकार के बरफीनुमा टाइल बनाया है जिसमें कोह्बर मंडप / घर पर बनाये जाने वाले सभी वस्तुओ व आलेखनो को उकेरा है कोनो में छोटे छिद्र किये ताकि आगे इन्हे कपडे पर Stich कर संकू, 140 छोटे छोटे टाइल का निर्माण किया गया है जिसमे वर-वधू पक्ष व जलीय जीव –जन्तु, तांत्रिक / नक्षत्रिय प्रतीक चिन्हो के अलावा घरेलू वस्तुओ का भी विवरण है। यै कार्य कोह्बर की गौरवशाली परम्परा को इंगित करता है।

चौथा कार्य का विवरण:- अन्य कार्य में मैने Ceremic clay में डॉई / मोल्ड प्रोसेस द्वारा Textile block का म्युरल बनाया है जिसमे चिड़िया को दर्शाया है जिसका सारगर्भित अर्थ यह है कि वंधू अपने घर को छोडकर नये संसार (ससुराल) की और कदम बढ़ा दी है।

पॉचवे / छटे, सॉतवे कार्य का विवरण:- कागज पर बनाए गय अन्य कार्यो में मैने आधुनिक जगत पर हो रहे समसमायिकी घटनाओ व बस्तुओ एंवम बदल रहे मानव स्वरूप, स्वभाव एंव रहन- सहन के प्रभाव का प्रींटिग मे प्रस्तुत किया है। १ $^{१/२}$ फीट × २ फीट के कैनवास पर मैने कोह्बर के रूढिगत आलेखन के चिह्नो को अपने विचारो व आस-पास मे हो रहे प्रभावो के अनुसार ही बनाया है अपने Creative Output के आधार पर मैने कोह्बर के भूल – स्वरूप को बरकरार रखा है। साथ ही साथ Contemporat Art के नियम के आधार पर नया स्वरुप दिया है।

की। यह मेरा अनुठा प्रयोग रहा जो अन्य चरण की प्रक्रिया पर है उसकी प्रक्रिया का चित्र भी शोधपत्र पर संलग्न है।

प्रथम कार्य का विवरण:- सेरामिक Stone ware विधि द्वारा तैयार किया गया मेरा प्रथम कार्य १ फीट x १ फीट के चार म्यूरल टाइल है जिसपर किये गये Coil व Block कटिंग विधि द्वारा कोह्बर के पांरपरिक प्रतीक चिह्नो के अलावा नवजोड़े का चित्रण भी है विवाह के विवाह मंडप को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया है सात ही विवाह वेदी / यज्ञ का निरूपण किया है यह कोह्बर मंडप पर होने वाले रीति – रिवाज की ओर इंगित करता है अग्नि को चित्रण भी इसमें है जोकि कोह्बर में पवित्र व अवश्याभी होता है इस प्रक्रिया के चरण में इसको Glaze करके Electronic furnish में पकाया जायेगा। इसका का Extension part में पणु- पक्षियो का चित्रण भी किया है।

द्वितीय कार्य:- Stone ware द्वारा तैयार अपने प्रयोगात्मक कार्य जोकि ३ फीट × २ फीट × १/२ फीट का है जिसमे मैने डॉई माध्यम द्वारा Textile block के डिजाइन के आधार पर मै कोह्बर के अल्पना रेखांकन के आधार पर मैने कोह्बर के अल्पना रेखांकन के समान ही बनाया है परन्तु पंरपारिक तरीके से ना करके उसका Treatment समसमायिक व Modern art के अनुसार किया है। इसका कार्य का उद्वेश्य यह है कि नवव्याहता के संदूक में रखे कपड़े, विवाह का रहेगा / साडी पर बनी डिजाइन की ओर इंगित करता है साथ ही साथ विवाह में दहेज रूपी कुप्रथा पर भी चोट करता है। विवाह के दौरान भेंट स्वरूप प्रदान की जाने वाली वस्तुओ (मुख्यत: वर पक्ष के कपड़े व कीमती आभूषण)

१९६० के अनुसार भरनी व काचनी मुख्यत: भारत व नेपाल के समीपवर्ती इलाको की कायस्थ सजातीय उच्चकुलीय वर्ग की महिलाओ द्वारा बनाया जाता रहा है जोकि हिन्दू –देवी देवताओ व प्रकृति के मनोरम दृश्यो से भरपूर होता था। इसके अलावा तांत्रिक आलेखन, कोह्बर , तत्रमंत्र – जाप करने वाली अन्य जनजाति के समुदाय वाले लोगो के द्वारा बनाया जाता था जिसमें तांत्रिक प्रतीकात्मक चिह्नो के साथ साथ उनके कुल के देवता के रेखाकिंत होते थे जो उनकी जाति विशेष की पहचान दर्शाते थे। निम्न जाति मे आम जीवन के दृश्यों व उनके 'राजा सलेश' व अन्य चित्र होते थे। वे अपने आस- पास के समान चीजो, घरेलू बस्तुओ, कृषि आधारित चीजो को अपनी विशेष कारीगरी द्वारा उत्तम तरीको से चित्रित करने थे। गोदना कोह्बर मे गोदना कला को मोरी, चपटी, निडरतापूर्वक रेखाओ व बिन्दुओ द्वारा बनाये थे। अंतिम मे गोदना कला में कोह्बर के स्थान पर गोबर चूने से लीप कर तैयार करते थे और जवा गाढ देते थे। परन्तु आज सार्वभौमिक ख्याति प्राप्त यह कला अपने रूढिबादिता / जातिबंधन को त्याग कर आज विश्व में जानी जाती है।

शोधकार्य के दौरान किये गये कार्यो का विवरण व प्रक्रिया का विवरण :-

अपने ६ माह के शोध कार्य के दौरान, उडीसा, पटना के इलाको में, बेगलौर आदि जगहो के लोककलाकारो व आधुनिक कलाकारो से मिलना हुआ जिसका परिलक्षण मेरे शोध पत्र पर व कार्य पर साफ प्रतिबिंबित हुआ। कैनवास कागज / कपड़े आदि के परंपरागत माध्यम के अलावा मैने अपने कार्य - प्रणाली के माध्यम को अन्य माध्यम द्वारा करना प्रारम्भ किया, मैने सेरामिक माध्यम द्वारा कोह्बर आलेखन को म्यूरल में बनाने की प्रक्रिया शुरू

आटे से लीपना तैयार करती है और उसके प्रतीकात्मक रूप से राम –सीता के जोडे को बनाती है इसका अर्थ यह होता है कि वे जन्म जन्मातर के लिए इस बंधन को निभायेगे।

कोहबर मंडप का महत्व :- कोहबर मंडप एक मनोरम, चिताकर्षक अंलकरण होता है जिसमे मुख्य भाग में देवी (विदेयक) को रेखांकित किया जाता है जिसे कोहबर घर कहते है। यह अति मनोरम, अल्पना डिजाइन पर आधारित एक विशेष प्रकार की ज्यामितिय आलेखन होता है जिनके मूलत: अंलकरण पर समय का विशेष प्रभाव नही पडा। सालो से ही यह इसी प्रकार से बना आ रहा है। ज्यामितिय डिजाइन व प्रकृतिक मंडलो पर आधारित यह एक पौराणिक, पंरपरागत अंलकार होता है जिसका प्रतिकात्मक रूप से सारगर्भिति अर्थ होता है इसमे कमल व बाँस के चित्रण के अलावा मछली , चिड़िया , साँप के जोडे व समुह तथा नदी / तालाब के अनूठे जीवन का मनोरम दृश्य उकेरा जाता है। इसके अलावा यह उर्वरत्व व वंशवृद्धि अथॉत् मानव जाति के प्रसरण की ओर इंगित करता है। मिथिला की परंपरा के अनुसार विवाह पश्चात तीन दिन मंडप के कोहबर के नीचे नवजोड़ा रस्मो – रिवाजो के साथ बिताता है। चौथी रात को कोहबर घर के समीप उन्हे रखा जाता है। ऐसी मान्यता है कि कोहबर घण में रेखित नवविवाहित जोडे को आने वाले जीवन के लिए आशीर्वाद प्रदान करना है- कुल / जाति के आधार पर कोहबर के तरीके को भागो में बाँटा गया है:-

१) भरनी

२) काचनी

३) तांत्रिक

४) गोदना

५) गोबर द्वारा

–देवताओ का रेखांकन महत्वपूर्ण होता है। ब्राह्मण कुल की महिलाएं विवाह मंडप पर मिथिला नरेश जनकपुत्री सीता –राम के विवाह पर आधारित चित्रण करती आई है। रामायण आधारित कई पेंटिग आज भी मिथिला के घर-घर पर अपनी छाप छोडी हुई है। प्रकृति पर आधारित प्रतिकात्मक रूपण के अलावा देवी- देवताओ यें गणेश –लक्ष्मी, शिव – पार्वती, विष्णु – लक्ष्मी , राम –सीता सहित अन्य भाई बधू , देवी सरस्वती के साथ ही प्रकृति के देवता सूर्य नारायण, चन्द्र, नक्षत्र इत्यादि भी रेखांकित किया जाता रहा है ।

दरभंगा के कुछ इलाको में भ्रमण के दौरान यहाँ के कलाकारो को देवी –देवताओ का चित्र बनाते देखने अनूठा अनुभव रहा। इन कलाकारो के कूँची में इतकी कुशलता देखी कि बिना किसी स्टेन्सिल के एक बार में चित्र को जीवंत बना दिया।

विवाह सबंधी सभी रस्मों में गणेश भगवान की उपसिधित आवश्यक होती है मंडप के चारो और दीवारो पर गणेश मूषक के साथ विराजमान रहते है इसके अलावा वधू अपने पिता के घर से लाए पीले रंग के कपडे पर भी गणेश का चित्रण होता उसमे वर –वधू का नाम, शुभ लाभ, पानके पत्ते, सुपारी, अक्षत, कलश, नारियल , पक्षी के जोडे, व प्रतीक वर –वधू का रेखांकन होता है। कलाकार दुलारी देवी कहती है कि वे रोज गणेश जी को जरूर बनाती है यह उनकी जीवन – शैली का हिस्सा बन गई। साथ –साथ जोडे के रूप में शिव – पार्वती, सीता- राम, विष्णु-लक्ष्मी इत्यादि का चित्रण यह नवविवाहित जोड़े के रिश्ते को आशीर्वाद स्वररूप अटूट बनाये रखने के लिए प्रतीकात्मक रूप से बनाये जाते है। कोहबर रस्म में जब जब मंडप के नीचे जोड़ा पूजा करता है तो दुल्हन अपने हाथों से जल्दी , गेरू व चावल के

उठावनी एकादशी में कोहबर के अल्पना चित्रण को घर के ऑगन, तुलसी को क्यारी व दरवाजे के चौखट पर बनाया जाता है।

६० वें दशक के बाद जब मिथिला कला देश – विदेशो मे पहचाने जाने लगी तो फिर रूढ्विवादिता को छोडकर सभी कलाकार इसे करने लगे और रोजी –रोटी का साधन बना लिया। कोहबर में ब्राह्मण जाति में मंडप बनाया जाता था। गोदना कला जो कि निम्न जाति द्वारा चमडे पर बनाया जाता था। घूमंतू जाति की महिलाओ अपने शरीर के अलावा चमड़े पर इसे बनाती थी। कुछ कलाकारों के प्रयोग से वे इसका चिंत्राकन कपडे व कागज पर करना शुरू कर दिया। मिथिला का कलाकार ख्यातिप्राप्त चानु देवी (राष्ट्रपति पुरस्कार द्वारा सम्मानित) जोकि दलित जाति से भी उनके प्रयास द्वारा नरक समुदाय की अन्य महिलाएं भी इस कला को करने लगी। वे अपने विषय में समुदाय के देवीदेवताओ , उनकी प्रचलित कहानियो का चित्रण शुरू किया। जर्मनी की एरिका मार्क के प्रयासो से भी निम्न तबके की महिलाए इस क्षेत्र प्रति जागरुक हुई अपनी लोककला को रोजगार का माध्यम बनालिया। इससे कलाकारो के जीवन –स्तर पर भी प्रभाव पडा। जमीनी स्तर पर किये गये सरकार व अन्य लोगो के प्रयासो से मिथिला की कला व कलाकार आज पहचान के मोहताज नहीं है।

जितबरपुर की दिवंगत महिला कलाकार जगदम्बादेवी, गंगादेवी , सीतादेवी, बुवादेवी, यशोदा देवी इत्यादी का योगदान अविस्मरणीय है।

कोहबर के चित्रण में देवी- देवताओ के चित्र का महत्व:-बिहार में विवाह एंव कोहबर एक –दूसरे के पर्याय माने जाते है कोहबर को विबाह मंडप पर व नवविवाहित जोडे के कमरे की दीवारो पर चित्रित किया जाता है जिससे शुभ- प्रतीको, चिह्नो के साथ –साथ हिन्दू देवी

करचुके है और विदेशो से भी देश की कला के गौरवान्वित कर चुके है। उनमे से कुछ के साथ वार्ता के दौरान कला- दर्शन पर भी बात हुई तो पता चला कि जितना इस कला में रंगो का प्रयोग होता है उतना उसको सुरूचिपूर्ण बनाने मे किये गये अपने प्रयासो व समय का मुल्यांकन उसको विक्य करने पर मिलने वाले परितोष भिन्न साबित होता है। परन्तु इन जीवंत कलाकारो के चेहरे पर संतोष व कला के प्रति समर्पण साफ दिखाई देता है। बर्तमान व पूर्व के समय की तुलना करने पर सभी बुजुर्ग कलाकार यही कहते है कि आज व तब के कलाकारों की परेशानियो में काफी अंतर आया है। सरकार व बडे कलाकारो के प्रयासो से अब काफी बदलाव आया है अब यह कला अपने स्वर्णिम समय को देख रही है।

कलाकार रामलाल कोन व दुलारी देवी से हुई बातचीत के दौरान यह पता चला कि उन्होने यह कला महान ख्याति प्राप्त महासुंदरी देवी के द्वारा सीखा है इस कला मे आने से पहले वे बर्तन धोने का कार्य करती थी परन्तु इस कला द्वारा इनका जीवन बदल गया, आज वे १०० से भी ज्यादा Workshop करा चुकी है।

मिथिला आर्ट स्कूल के ट्रेनर डॉ रानी झा के अनुसार सभी शुभ अवसरो के अलावा मनुष्य के जीवन में होने वाले १६ संस्कारो में से ५ मुख्यत संस्कार जैसे- जन्म, मुंडन, जनेऊ , शादी , श्राद्ध में लोकचित्र अवश्य बनाया जाता है। जोकि इस अवसर की शुभता व सुचिता का बढ़ाता जाता है। मिथिला के घर –घर में इस चित्रण अवश्यांभी होता है। जिसके चित्रण में अवश्यांभी होता है। मृत्यु मे किये जाने वाले चित्रण में सफेद रंग (शांति का प्रतिक) से शून्य बनाया जाता है जो ब्रह्म व आत्मा के संम्बध का परिलक्षित करता है। देव

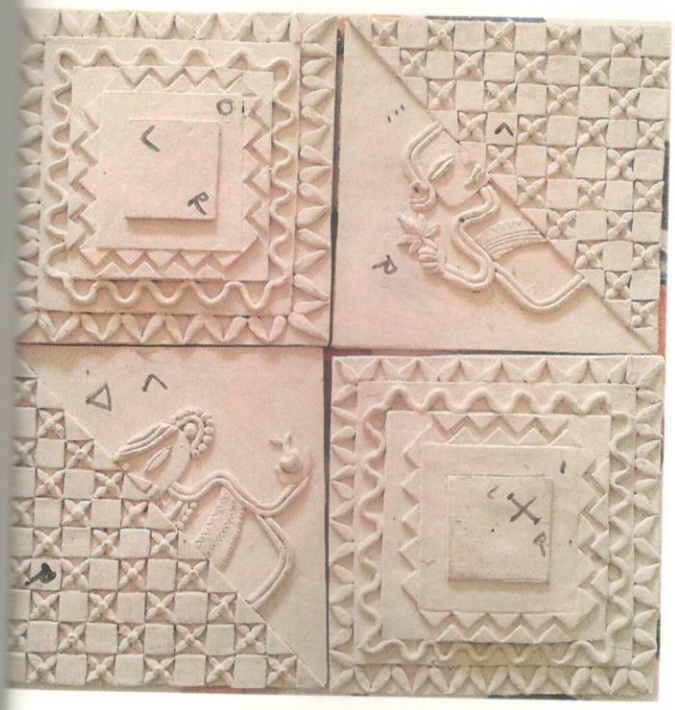

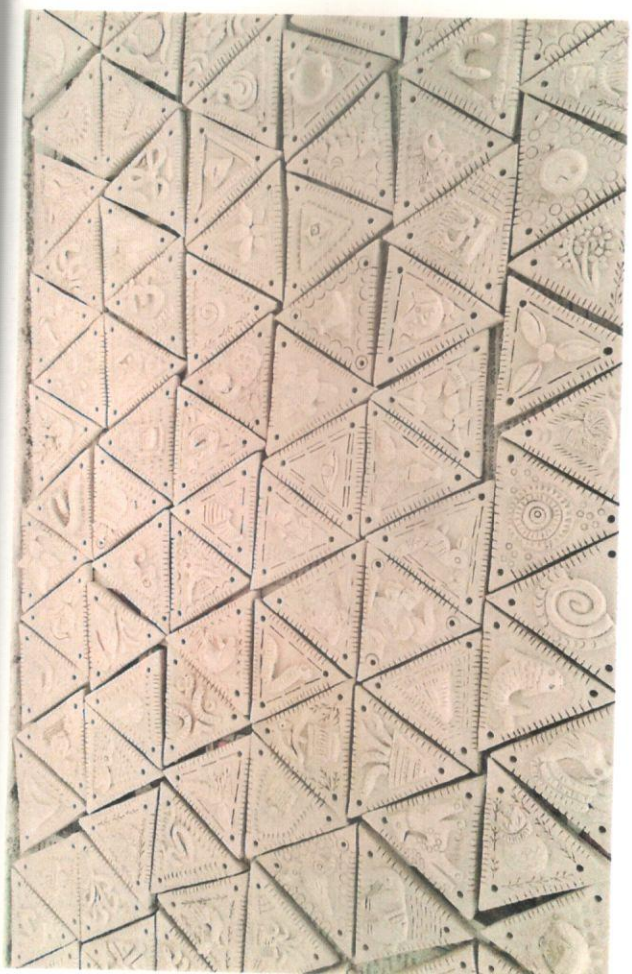

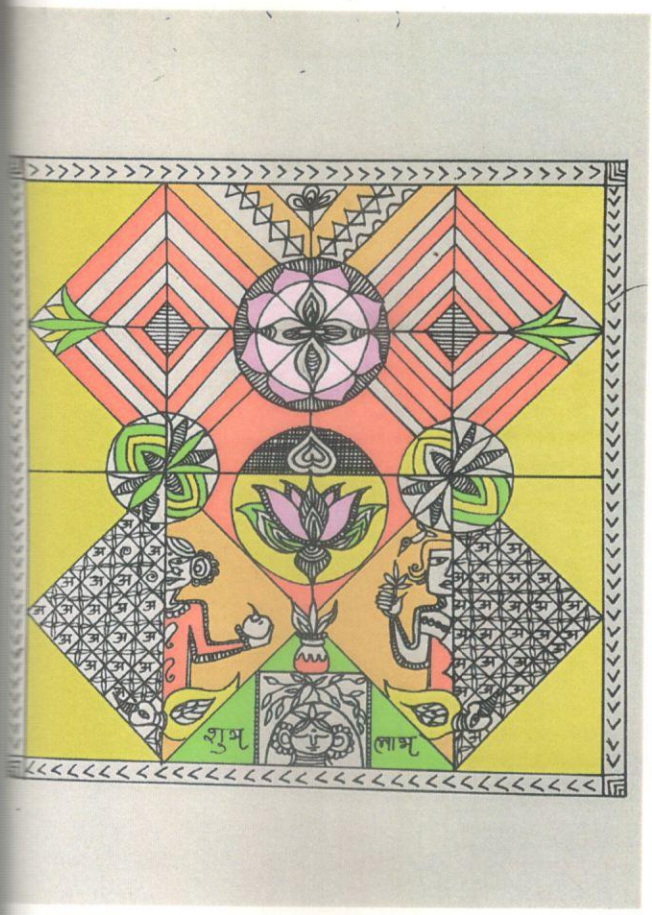
शुभ
लाभ